P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-8* November- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में वित्तीय प्रबन्ध एवं नियंत्रण –एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

महेन्द्र कुमार खारड़िया
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
ए0बी0एस0टी0 विभाग,
राजकीय लोहिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चूरू,
राजस्थान

सारांश

राज्य पथ परिवहन निगम न केवल राजस्थान में बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर पथ परिवहन यात्री सेवा प्रदान करने में एक अग्रणी निगम है। यह निगम अपनी स्थापना से ही न लाभ न हानि के सिद्धान्त के आधार पर यात्री सेवाएं प्रदान करके सामाजिक उत्तरदायित्व की पूर्ति कर रहा है परन्तु देखने में आया है कि निगम लगातार घाटे में संचालित है। निगम अपने कर्मचारियों के वेतन–भत्तों के भुगतान और संचालित बसों के रखरखाव करने में असहाय है जिसका मुख्य कारण निगम का वित्तीय प्रबन्धन एवं नियन्त्रण को दोषपूर्ण का होना है। इतना ही नहीं पिछले वर्षों में सरकार ने लोक परिवहन सेवा जैसी समान्तर व्यवस्था व्यवस्था को स्थापित करके राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की वित्तीय व्यवस्था को और अधिक असहाय बना दिया है। अतः इस निगम की वित्तीय प्रबन्ध व्यवस्था को सुधारने के लिए प्रभावी प्रयासों की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द : वित्तीय प्रबन्ध, वित्तीय सिद्धान्त, लागत नियन्त्रण, लाभदायकता विश्लेषण, परिवहन सेवा, अंकेक्षण नियन्त्रण, निगम घाटा, आर्थिक अकुशलता।

प्रस्तावना

केन्द्रीय पथ परिवहन अधिनियम–1950 के अधीन राजस्थान सरकार द्वारा 01 अक्टूबर, 1964 को राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की स्थापना की गई। निगम का प्रमुख उद्देश्य यात्री परिवहन सेवा के क्षेत्र में सस्ती, सहज, सुलभ, समन्वित तथा सुविधायुक्त यात्री सेवायें उपलब्ध करवाना है। सार्वजनिक उपक्रम के रूप में निगम की यात्री परिवहन सेवा के क्षेत्र में स्थापना की मूल अवधारणा भारतीय संविधान में स्वीकृत समतावादी एवं लोक कल्याण दर्शन की रही है। चूंकि निगम एक महत्वपूर्ण जनोपयोगी सेवा के क्षेत्र से सम्बद्ध है, अतः प्रभावी एवं न्यूनतम लागत पर जनसेवा की विशेष अपेक्षा रहती है। यात्री परिवहन सेवा के क्षेत्र में राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम का यह पंचम दशक चल रहा है। राजस्थान जैसे सीमावर्ती एवं मरूस्थलीय प्रदेश में यह निगम यात्री परिवहन सेवा को तत्परता से सामान्य जन को सुलभ करवाने का चुनौतीपूर्ण दायित्व निर्वाहित कर रहा है।[1] किसी भी क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, औद्योगिक तथा भावनात्मक एकता के विकास हेतु उन्नत एवं सुविधायुक्त यात्री परिवहन सेवा विशेषतः एक प्राथमिक आवश्यकता है।

यात्री परिवहन सेवा का जनसामान्य से प्रत्यक्ष एवं घनिष्ठ सम्बन्ध है। अतः इस सेवा में किसी भी तरह की अकुशलता एवं शिथिलता का कोई भी स्थान नहीं है। सदैव सजगता एवं तत्परता की जनसामान्य को अपेक्षा रहती ही है। निगम की व्यवस्था के लिये एक संचालक मण्डल है। निगम की प्रशासनिक व्यवस्था स्थापना वर्ष 1964 से जुलाई 1991 तक त्रिस्तरीय ढांचे के रूप में विद्यमान थी, लेकिन माह अगस्त 1991 से यह व्यवस्था द्विस्तरीय ढांचे में परिवर्तित कर दी गई।[2] इस प्रकार वर्तमान में प्रथम स्तर पर केन्द्रीय कार्यालय प्रबन्ध तथा द्वितीय स्तर पर राज्य के अलग–अलग शहरों में स्थित निगम के आगार स्तरीय कार्यालय शामिल हैं।

शोध समस्या

राजस्थान राज्य परिवहन निगम अपनी स्थापना से ही न केवल राजस्थान राज्य में बल्कि पड़ौसी राज्यों में भी अपनी परिवहन सेवाऐं प्रदान करके राज्य एवं देश के लिए सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में योगदान दे रहा है परन्तु देखने में यह आया है कि निगम लगातार घाटे में संचालित है, जिसके कारण निगम अपने कर्मचारियों के वेतन–भत्तों के भुगतान और संचालित बसों के रख–रखाव करने में असहाय है, जिसका मुख्य कारण

निगम का वित्तीय प्रबन्ध एवं नियन्त्रण का दोषपूर्ण माना जाता है।[3] अतः इस शोध कार्य में ''राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में वित्तीय प्रबन्ध एवं नियंत्रण – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है ताकि निगम की वित्तीय अनियमितताऐं अवलोकित की जा सकें और उनका निदान करके निगम की वित्तीय कार्य क्षमता को जनहित में सुधारा जा सके।

शोध कार्य की उपादेयता एवं उद्देश्य

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम एक जनोपयोगी प्रतिष्ठान के रूप में राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर यात्रा परिवहन सेवा प्रदान करने के उद्देश्य से संचालित है। इस निगम का वित्तीय प्रबन्ध राज्य सरकार द्वारा निर्धारित वित्तीय सिद्धान्तों एवं नीति निर्देशों के अनुरूप राज्य के परिवहन विकास को ध्यान में रखकर किया जा रहा है। निगम की वित्तीय आवश्यकता को पूरा करने के लिए प्राथमिक रूप से पूंजी राज्य सरकार द्वारा प्रदत्त की गई है तथा अतिरिक्त वित्तीय आवश्यकता के लिए निगम वित्तीय संस्थाओं एवं विनियोग निगमों से ऋण एवं सहायता प्राप्त करता है। परन्तु देखने में यह आया है कि निगम का वित्तीय प्रबन्ध वाणिज्य के सिद्धान्तों के अनुरूप न होने के कारण निगम के सामने वित्तीय अभाव की समस्या बनी हुई है। इस समस्या का समाधान निगम के कुशल वित्तीय प्रबन्ध के संचालन एवं प्रयोग पर निर्भर करता है।[4] प्रस्तुत शोध–पत्र का मुख्य उदेद्य राजस्थान राज्य परिवहन निगम के वित्तीय प्रबन्ध एवं नियंत्रण की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करना है। इसके अलावा इस शोध समस्या में निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कार्य किया गया है –

1. निगम के उपलब्ध वित्तीय स्त्रोतों का अध्ययन करना।
2. निगम की वर्तमान वित्तीय निष्पादन की स्थिति का मूल्यांकन करना।
3. निगम की घाटे की स्थिति, कारण एवं निदान के उपायों की जानकारी प्राप्त करना ।
4. निगम की लाभदायता एवं भावी नियोजन से सम्बन्धित नीतियों पर विचार करना।
5. निगम के लिए वैकल्पिक एवं भावी वित्तीय आवश्यकताओं पर विचार करना।
6. निगम की कार्यप्रणाली में सुधार हेतु निजी क्षेत्र की कार्यप्रणाली से सम्बन्धित नीति को अपनाना।
7. निगम की वित्तीय प्रबन्ध एवं नियंत्रण की कार्यप्रणाली को ज्ञात करना।
8. घाटे की स्थिति के कारणों का पता लगाना।
9. निगम में वित्तीय नियोजन एवं नियंत्रण में सुधार की सम्भावनाओं का आंकलन
10. निगम में वित्तीय नियोजन एवं नियंत्रण में सुधार के लिये सुझाव प्रस्तुत करना।

साहित्यावलोकन

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की वित्तीय प्रबन्ध एवं नियन्त्रण व्यवस्था का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के लिए इस विषय पर पूर्व में किये गये विभिन्न शोध कार्यों और शोध लेखों को विश्लेषित किया गया है ताकि इस शोध समस्या से प्राप्त निष्कर्षों और अवलोकन की प्रमाणिकता व्यापक रूप से सिद्ध हो सकें। इस कार्य हेतु इस शोध से जुड़े हुए प्रत्यक्ष एवं परोक्ष विचारों को नीचे दिये गये साहित्य अवलोकनों से जोड़ने का प्रयास किया गया है।

लोक उपक्रमों के प्रबन्ध और संचालन की सफलता उसके कुशल वित्तीय प्रबन्ध एवं नियन्त्रण पर निर्भर करती है। इस तथ्य को डॉ. बी. एल. वर्मा ने शोध ग्रन्थ ''लोक उपक्रमों के वित्तीय विवरणों का तुलनात्मक विश्लेषण'' में प्रस्तुत किया है और बताया है कि लोक उपक्रमों, जिनमें राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम भी शामिल है, में वित्तीय प्रबन्ध एवं नियन्त्रण व्यवस्था का संचालन सरकारी नियमों के अनुरूप होता है न कि वाणिज्यिक सिद्धान्तों के अनुसार। अतः विभिन्न निर्णयों में विलम्ब होता है और लालफीताशाही, भ्रष्टाचार एवं चोरी जैसी समस्याओं के कारण निगम घाटे में संचालित है। इतना ही नहीं राज्य परिवहन निगम बढ़ती हुई संचालन लागतों के कारण लगातार घाटे उठा रहा है।[5]

राज्य पथ परिवहन निगमों के द्वारा स्थानीय जनता को सस्ती, सुलभ और समयबद्ध सेवा प्रदान की जाती है। इस सेवा की संचालन लागत और उनका लाभदायकता पर प्रभाव का आंकलन करते हुए प्रो. एम. एस. तुरान ने अपने शोध लेख ''हरियाणा राज्य पथ परिवहन निगम की कार्य प्रणाली एवं नियन्त्रण व्यवस्था'' में बताया है कि यह निगम राज्य में लोक उपक्रम के रूप में जनता को सस्ती परिवहन सेवा देने के उद्देश्य से स्थापित एवं संचालित है परन्तु निगम की वित्तीय प्रबन्ध व्यवस्था के दोषपूर्ण संचालन ने इस आधारभूत उद्देश्य की प्राप्ति को पूरा करने में अवरोध पैदा किया है। इतना ही नहीं निगम में प्रभावी अंकेक्षण प्रणाली के अभाव में भ्रष्टाचार एवं घाटे की समस्या को अधिक गम्भीर बना दिया है, जिसके कारण निगम की वित्तीय व्यवस्था लगभग समाप्त हो गयी है और निगम बन्द होने की स्थिति है, जिसे सरकारी सहायता से संचालित किया जा रहा है।[6]

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के द्वारा देश के सबसे बड़े राज्य में परिवहन सेवा प्रदान की जा रही है। परन्तु यह निगम घाटे में संचालित है। इस प्रवृत्ति का मूल्यांकन करने के लिए डॉ. मोहन लाल शर्मा द्वारा प्रस्तुत अपने शोध पत्र ''राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में लाभदायकता का एक मूल्यांकन'' का विश्लेषण एवं अवलोकन करने पर पता चलता है कि निगम की वित्तीय प्रबन्ध व्यवस्था दोष पूर्ण है तथा निगम की कार्यप्रणाली का संचालन वाणिज्यिक सिद्धान्तों पर नहीं किया जा रहा है, जिसके कारण निगम को लगातार हानि उठानी पड़ रही है। इस शोधपत्र में इस तथ्य को भी बताया है कि निगम को निजी क्षेत्र से प्रतिस्पर्द्धा करनी पड़ रही है और निगम चाहकर भी निजी क्षेत्र की भांति प्रतिदिन आवश्यकतानुसार किराये में परिवर्तन नहीं कर सकता। इस शोधपत्र में हानि पर नियन्त्रण के लिए कई उपाय सुझाये गये हैं जिनमें सबसे अधिक बल बढ़ती हुई संचालन लागत के नियन्त्रण पर दिया गया है।[7]

राज्य परिवहन निगम राज्य के आर्थिक विकास का मुख्य आधार माना जाता है। इस तथ्य पर बल देते हुए प्रो. लक्ष्मी नारायण नाथूरामका ने राजस्थान की

अर्थव्यवस्था नाम पुस्तक में लिखा है कि राजस्थान जैसे पिछड़े राज्य के सामाजिक और आर्थिक विकास में राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम का महत्वपूर्ण योगदान है। इस निगम ने पिछले तीन दशकों में परिवहन के क्षेत्र में राज्य की जनता को सस्ती और सुलभ परिवहन सेवाऐं प्रदान की हैं परन्तु इस निगम की आर्थिक स्थिति विभिन्न कारणों से लगातार खराब होती जा रही है। अतः सरकार और समाज दोनों को इस निगम की कार्यप्रणाली में सुधार प्रोत्साहित करना चाहिए।[8]

राज्य पथ परिवहन निगमों की गिरती हुई लाभदायकता भी इन निगमों के लिए एक चिन्तनीय विषय है। प्रो. गुरूदत्त शर्मा ने अपने शोध लेख ''राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की लाभदायकता का एक अध्ययन'' में बताया है कि यह परिवहन निगम राज्य में न लाभ न हानि के उद्देश्य के आधार पर परिवहन सेवाऐं प्रदान कर रहा है, जो वर्तमान आर्थिक युग में इस निगम के आर्थिक स्वास्थ्य के लिए उचित नहीं है। निगम में विभिन्न प्रबन्धकीय और कार्मिक कारणों से संचालन लागतें बढ़ रही हैं। इन संचालन लागतों में वृद्धि के लिए कर्मचारियों का वेतनभार सबसे बड़ा कारण है। इसके साथ ही साथ यात्री बसों का अनार्थिक संचालन भी इस निगम के घाटे को बढ़ा रहा है। अतः निगम की लाभदायकता को बनाये रखने के लिए आर्थिक सिद्धान्तों का अनुसरण अति आवश्यक है।[9]

कार्यशील पूंजी एक व्यवसाय का जीवन रक्त मानी जाती है। क्योंकि यह पूँजी एक व्यवसाय में उसकी दैनिक वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करके व्यवसाय को नियमित गति प्रदान करती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए राव सेटमूथ मार्टिन ने अपने शोध ग्रन्थ ''भारत में यातायात प्रबन्ध व्यवस्था में कार्यशील पूंजी की आवश्यकता का अध्ययन (राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के विशेष सन्दर्भ में)'' व्यक्त किया है। इस परिवहन निगम में कार्यशील पूंजी का गुणात्मक स्तर काफी कम है और इसके साथ ही साथ मात्रात्मक आधार भी कमजोर है। कार्यशील पूंजी की कमी सदैव बनी रहती है, जिसके कारण निगम की दैनिक कार्यविधि बाधित है। अतः निगम में सुदृढ़ वित्तीय प्रबन्ध के माध्यम से कार्यशील पूंजी की पर्याप्ता और प्रयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए।''[10]

डॉ. श्याम सुन्दर शर्मा ने राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की सफलता का मूल्यांकन करने के लिए उपभोक्ता (यात्री) सन्तुष्टि को आधार माना है। डॉ. शर्मा ने अपने शोध ग्रन्थ ''राजस्थान में लोक उपक्रमों का संचालन और उपभोक्ता हित (राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम का एक विशेष अध्ययन)'' में बताया है कि लोक उपक्रमों का संचालन राज्य सरकार के द्वारा आर्थिक आधार पर न करके सामाजिक उत्तरदायित्व की पूर्ति के लिए किया जा रहा है। राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम इस उद्देश्य की पूर्ति में पूर्णतः सफल है। इतना ही नहीं निगम के द्वारा प्रदत्त की जा रही यात्री सेवाऐं मूलतः सामाजिक दृष्टि से समाज के सर्वहारा वर्ग के लिए प्रयोग योग्य है और निजी क्षेत्र के मुकाबले अधिक सस्ती और सुलभ है, जिसके कारण आम व्यक्ति को निजी बसों की बजाय निगम की बसों में यात्रा करना पसन्द करता है।[11]

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य में राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की वित्तीय प्रबन्ध एवं नियन्त्रण व्यवस्था का अध्ययन और विश्लेषण करने के लिए विभिन्न स्रोतों से सूचना प्राप्ति के लिए प्राथमिक और द्वितीयक समकों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक समकों को प्राप्त करने के लिए निगम के अधिकारियों और कर्मचारियों से व्यक्तिगत साक्षात्कार, प्रश्नावली एवं अनुसूची विधियों का यथा सम्भव प्रयोग किया गया है। द्वितीयक समकों एवं सूचनाओं की प्राप्ति के लिए निगम के विभिन्न वित्तीय वर्षों के वार्षिक प्रतिवेदनों, अंकेक्षण रिपोर्टों, लेखा विवरण पत्रों एवं पूर्व में किये गये शोध कार्यों का प्रयोग किया गया है।[12] शोध कार्य की प्रमाणिकता को बनाये रखने के लिए सांख्यिकीय प्रविधियों का भी यथा सम्भव प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध समस्या राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में वितीय प्रबन्ध एवं नियंत्रण प्रणाली के अध्ययन से जुडी हुई है। अतः इस वर्तमान व्यवस्था के प्रभावी अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं को प्रस्तावित किया जाना उचित माना है –

1. निगम में वर्तमान में प्रचलित वित्तीय प्रबन्ध एवं नियंत्रण व्यवस्था अधिक प्रभावी नही है।
2. निगम की प्रभावी एवं सहज संचालन व्यवस्था में कार्यशील पूंजी की तरलता की कमी एक महत्वपूर्ण समस्या है।
3. निगम में बढ़ते हुए घाटे की समस्या का मुख्य कारण प्रभावी वित्तीय प्रबन्ध एवं नियंत्रण का अभाव है।
4. निगम की वित्तीय प्रबन्ध एवं नियंत्रण व्यवस्था भ्रष्टाचार एवं लालफीताशाही से पीडित है।
5. निगम में बढ़ते हुई प्रचालन लागतों को वर्तमान वित्तीय प्रबन्ध व्यवस्था नियंत्रण करने में प्रभावी नही है।
6. वर्तमान में प्रचलित वित्तीय प्रबन्ध एवं नियंत्रण व्यवस्था में निजी क्षेत्र के अनुरुप सुधार निगम को संजीवनी प्रदान कर सकता है।

राजस्थान राज्य पथ परिवहन की वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन

निगम के वित्तीय स्रोत

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की स्थापना राजस्थान सरकार के द्वारा 01 अक्टूबर, 1964 में की गई। निगम की विनियोजित पूँजी वर्ष 1964 में 203.23 लाख रुपये थी। निगम में पूँजी के अलावा ऋण पूँजी का भी पर्याप्त मात्रा में सहारा लिया गया है। निगम की पूँजी को तालिका 1 के द्वारा दर्शाया गया है।[13]

तालिका 1

राजस्थान राज्य पथ परिवहन के वित्तीय स्रोत

(राशि लाखों में)

वर्ष	राज्य सरकार का अंशदान	केन्द्रीय सरकार का अंशदान	आन्तरिक स्रोत	ऋण	कुल वित्तीय स्रोत
2005-06	16713.50 (26.10)	2477.57 (3.87)	24672.03 (38.54)	17343.91 (27.09)	64022.35 (100.00)
2006-07	16713.50 (25.45)	2477.57 (3.77)	27288.17 (41.56)	16366.69 (24.93)	65661.11 (100.00)
2007-08	19323.50 (29.28)	2682.75 (4.065)	31585.00 (47.86)	14920.80 (22.61)	65994.75 (100.00)
2008-09	19323.50 (25.92)	2682.75 (3.60)	31512.27 (42.27)	21023.53 (28.20)	74542.05 (100.00)
2009-10	19323.50 (23.96)	2682.75 (3.33)	31585.16 (39.17)	27049.93 (33.54)	80641.34 (100.00)
2010-11	19323.50 (19.39)	2682.75 (2.69)	32261.68 (32.37)	45387.88 (45.54)	99655.81 (100.00)
2011-12	19323.50 (18.04)	2682.75 (2.50)	32101.54 (29.96)	53028.76 (49.50)	107136.55 (100.00)
2012-13	19323.50 (13.40)	2682.75 (1.86)	34701.99 (24.06)	68579.90 (47.55)	144238.41 (100.00)
2013-14	53213.50 (5.70)	2682.75 (0.29)	772370.63 (82.70)	105657.25 (11.31)	933924.13 (100.00)
2014-15	61213.50 (6.34)	2682.75 (0.28)	781160.12 (80.84)	121217.10 (12.54)	966273.47 (100.00)

स्रोत : वर्ष 2005–06 से वर्ष 2014–15 के निगम के वार्षिक प्रतिवेदन

तालिका 1 से स्पष्ट है कि वर्ष 2005–06 में निगम की विनियोजित पूँजी 64022.35 लाख रुपये थी, जिसमें राज्य सरकार का अंशदान 26.10 प्रतिशत था जबकि केन्द्रीय सरकार का योगदान 3.87 प्रतिशत रहा। निगम ने अपनी विनियोजित पूँजी में 38.54 प्रतिशत राशि आन्तरिक स्रोत से जुटाई तथा 27.89 प्रतिशत पूँजी ऋण के माध्यम से प्राप्त की। वर्ष 2005–06 के मुकाबले 2014–15 में कुल विनियोजित पूँजी बढ़कर 966273.47 लाख हो गई अर्थात् 2005–06 से 2014–15 के दौरान विनियोजित पूँजी में 15 गुना वृद्धि दर्ज की गई। विनियोजित पूँजी में सबसे अधिक योगदान आन्तरिक स्रोत का रहा है जो कि 2005–06 में 24672.03 लाख रुपये थे, जो बढ़कर वर्ष 2014–15 में 781160.12 लाख रुपये हो गये। अर्थात् इस अवधि के दौरान आन्तरिक स्रोत में वर्ष 2005–06 के मुकाबले 31.66 गुना वृद्धि दर्ज की गई।

निगम की पूँजी संरचना

एक निगम की सफलता उसकी पूँजी संरचना पर निर्भर करती है। पूँजी संरचना से आशय संस्था द्वारा जारी पूँजी राशि किन–किन प्रतिभूतियों के माध्यम से प्राप्त की गई।[14] तालिका 2 में राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की पूँजी संरचना को दिखाया गया है।[15]

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-8* November- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

तालिका 2
राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की पूँजी संरचना

(राशि लाखों में)

विवरण	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15
1. राज्य सरकार का अंशदान										
(अ) साधारण अंश पूँजी	16713.50	16713.50	16713.50	16713.50	16713.50	16713.50	16713.50	38213.30	53213.50	61213.50
(ब) पूँजी अंशदान	2610.00	2610.00	2610.00	2610.00	2610.00	2610.00	2610.00	-	.	.
2. केन्द्रीय सरकार का अंशदान										
(अ) साधारण अंश पूँजी	2477.57	2477.57	2477.57	2477.57	2477.57	2477.57	2477.57	2477.57	2477.57	2477.57
(ब) पूँजी अंशदान	205.18	205.18	205.18	205.18	205.18	205.18	205.18	205.18	205.18	205.18
3. आन्तरिक संसाधन (मूलधन एवं सुरक्षा निधि)	24672.03	27288.17	29067.54	31512.27	31585.16	32261.68	32101.54	34761.99	772370.63	781160.12
4. ऋण										
(क) राज्य सरकार से	-	-	-	-	-	-	-	1500.00	14790.00	17290.00
(अ) ऋण पत्र	-	-	-	-	-	-	-	50000.00	67500.00	67500.00
(ब) वाणिज्यिक बैंकों से	16258.91	15190.53	13671.80	19668.92	25608.21	40460.16	41981.04	8929.45	18890.45	16073.80
(स) कार्पस फण्ड से	1085.16	1176.16	1249.16	1354.61	1441.72	1527.72	1647.72	1650.72	1676.80	1763.81
(द) पेंशन फण्ड (आर.एस.आर.टी.सी.)	-	-	-	-	-	3400.00	7900.00	4500.00	-	1800.00
(ई) जी.पी.एफ.	-	-	-	-	-	-	1500.00	2500.00	2800.00	-
योग	64022.35	65661.11	65994.75	74542.05	80641.34	99655.81	107136.55	144238.41	933924.13	949483.98

स्रोत : वर्ष 2005–06 से वर्ष 2014–15 के निगम के वार्षिक प्रतिवेदन

तालिका 2 से स्पष्ट है कि वर्ष 2005–06 में निगम द्वारा प्राप्त की गयी पूँजी में राज्य सरकार द्वारा प्रदत्त पूँजी का अंशदान 19323.50 लाख रुपये था जबकि इस वित्तीय वर्ष में आन्तरिक संसाधनों का योगदान 24672.03 लाख रुपये बताया गया। वर्ष 2005–06 में ऋण पूँजी का योगदान 22008.25 लाख रुपये राशि रहा। वर्ष 2014–15 में राजस्थान सरकार द्वारा साधारण अंश पूँजी के रूप में 61213.50 लाख रुपये निगम में विनियोजित थे जबकि केन्द्र सरकार का अंशदान पूँजी में 2682.93 लाख रुपये था। आन्तरिक संसाधनों से वर्ष 2014–15 में 781160.12 लाख रुपये अर्जित किये गये जो वर्ष 2005–06 के मुकाबले 31.66 गुना वृद्धि को बताती है। इस वित्तीय वर्ष में ऋण पूँजी के रूप में 63896.25 लाख रुपये का विनियोजन था जो कि 2005–06 के मुकाबले 2.9 गुना वृद्धि को बताती है। अर्थात् निगम की पूँजी संरचना के प्रत्येक स्रोत में मात्रात्मक वृद्धि दर्ज की गई है। तालिका से यह तथ्य भी स्पष्ट है कि निगम समता व्यापार की नीति अर्थात् स्वामी पूँजी के साथ–साथ ऋण पूँजी का प्रयोग लेकर व्यापार संरचना का पालन किया गया है। इतना नहीं आन्तरिक स्रोतों से भी प्राप्त मात्रा में वित्तीय संसाधनों का प्रयोग किया गया है।

तालिका 3

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में पूँजी पर प्रतिफल

(राशि लाखों में)

क्र.सं.	वर्ष	पूँजी पर प्रतिफल	पूँजी पर प्रतिफल दर
1	2005-06	(-) 1385.78	(-) 6.3
2	2006-07	(-) 228.15	(-) 1.04
3	2007-08	(-) 635.58	(-) 2.89
4	2008-09	(-) 16787.22	(-) 76.28
5	2009-10	(-) 5096.79	(-) 23.16
6	2010-11	(-) 14534.86	(-) 66.05
7	2011-12	(-) 7020.27	(-) 31.9
8	2012-13	(-) 53919.81	(-) 131.85
9	2013-14	(-) 40567.34	(-) 75.58
10	2014-15	(-) 53253.47	(-) 83.34

स्रोत : वर्ष 2005–06 से वर्ष 2014–15 के निगम के वार्षिक प्रतिवेदन

तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 2005–06 में पूँजी पर प्रतिफल की राशि 1385.78 लाख रुपये के रूप में प्रतिकूल थी जो कि वर्ष 2014–15 में बढ़कर 53253.47 लाख रुपये प्रतिकुल हो गयी। वर्ष 2005–06 के मुकाबले पूँजी पर प्रतिफल की राशि 38.45 गुना प्रतिकुल हो गयी। इतना ही नहीं वर्ष 2005–06 में पूँजी पर प्रतिफल की दर (–) 6.3 प्रतिशत थी जो निगम के लगातार हानि पर चलने के कारण बढ़कर वर्ष 2011–12 में (–) 131.85 प्रतिशत हो गयी एवं वर्ष 2014–15 में यह दर (–) 83.34 प्रतिशत दर्ज की गयी। प्रतिफल की यह ऋणात्मक ऊंची दर निगम के लिए चिंता का विषय है।

तालिका 4

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में लाभदायकता की स्थिति

(राशि करोड़ों में)

वर्ष	लाभदायकता की स्थिति
2005-06	-375.56
2006-07	-394.70
2007-08	-418.13
2008-09	-602.51
2009-10	-686.56
2010-11	-873.39
2011-12	-1002.45
2012-13	-1650.88
2013-14	-1756.00
2014-15	-1912.06

स्रोत : वर्ष 2005–06 से वर्ष 2014–15 के निगम के वार्षिक प्रतिवेदन

किसी भी उपक्रम की सफलता का मूल्यांकन उसकी लाभ अर्जन क्षमता से किया जाता है। लाभ अर्जन क्षमता व्यवसाय की आर्थिक कुशलता का मापदण्ड मानी जाती है। राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में लाभदायकता की स्थिति प्रारम्भ से ही प्रतिकूल है। तालिका 4 से स्पष्ट है कि निगम की 2005–06 में हानि 375.56 करोड़ रुपये थी जो लगातार बढ़ती जा रही है तथा वर्ष 2014–15 में बढ़ कर 1912.06 हो गयी है।[16] निगम के संचालन पर भी सवाल खड़े होते हैं। इसका मुख्य कारण वित्तीय प्रबन्ध एवं नियन्त्रण व्यवस्था का व्यवस्थित नहीं होना है इसके कारण निगम में कार्यरत कर्मचारियों के वेतन, भत्तों का मूल्यांकन तथा संचालित बसों का रख–रखाव तथा मरम्मत का कार्य भी नहीं हो पा रहा है[17]।

निष्कर्ष

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की वित्तीय प्रबन्ध एंव नियन्त्रण व्यवस्था के पिछले 10 वित्तीय वर्षों यथा 2005–06 से 2014–15 के व्यापक अध्ययन एवं विश्लेषण करने के फलस्वरूप निम्नलिखित निष्कर्ष मुख्य रूप से प्राप्त हुए हैं :–

1. निगम का उद्देश्य यात्री परिवहन सेवा प्रदान करना है। इस परिवहन सेवा के लिए अत्यधिक वित्तीय संस्थानों की आवश्यकता लगातार बनी रहती है, जो कि इस निगम में स्थापना के प्रारम्भ से ही अपूर्ण है।
2. निगम के द्वारा परिवहन सेवाओं का संचालन आर्थिक उद्देश्य के बजाय सामाजिक उद्देश्य के आधार पर किया जाता है जिसके कारण निगम लगातार घाटे में संचालित है और राज्य सरकार के द्वारा लगातार वित्तीय सहायता करने के बावजूद भी दम तोड़ता जा रहा है।
3. राजस्थान राज्य में परिवहन सेवाऐं निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों के द्वारा प्रदान की जा रही हैं, जिसके कारण निगम निजी क्षेत्र से प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम नहीं है क्योंकि निगम को सरकारी नियमों एवं निर्देशों के अनुसार कार्य करना पड़ता है।
4. इस परिवहन निगम के द्वारा यात्री परिवहन सेवाओं का संचालन कर्मचारियों के माध्यम से किया जा रहा है। इन कर्मचारियों की गलत प्रवृतियों के कारण

भ्रष्टाचार, लालफीताशाही और चोरी की प्रवृतियों को बढ़ावा मिल रहा है जो कि निगम की लाभदायकता को कम करने का सबसे बड़ा कारण है।

5. निगम के द्वारा परिवहन सेवाओं का जो संचालन किया जा रहा है उसकी संचालन लागत संचालन आय से काफी ज्यादा है जो निगम की लाभदायकता में कमी का एक आधारभूत कारण है।
6. इस परिवहन निगम में सरकारी नियमों और निर्देशों के आधार पर बसों, डीजल और अन्य उपकरणों की खरीद होती है, जो कि निगम के अधिकारियों के कमीशन के कारण ऊंची लागत पर की जाती है जिसके कारण भी निगम की वित्तीय प्रबन्ध व्यवस्था लगातार चरमरा रही है।
7. इस परिवहन निगम के द्वारा अपने अधिकारियों और कर्मचारियों को जो वेतन भत्ते दिये जा रहे हैं वे काफी भारी भरकम हैं और इसके कारण भी निगम वित्तीय संकट में फंसा हुआ है।
8. निगम में बसों का संचालन समयबद्ध नहीं है तथा इन बसों के कर्मचारियों के द्वारा यात्रियों को बिना टिकट यात्रा करवाना एक मुख्य प्रवृति बन गयी है एवं डीजल चोरी भी एक समस्या बनी हुई है जिसके कारण भी निगम के घाटे की स्थिति बढ़ रही है।
9. राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में सामग्री प्रबन्ध एवं नियन्त्रण व्यवस्था पूर्णतः अव्यवस्थित है, जिसके कारण सामग्री चोरी, छीजत और अप्रचलन जैसी समस्या उग्र होती जा रही हैं और यह समस्या निगम के घाटे को बढ़ा रही हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रस्तुत शोध कार्य में राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की वित्तीय प्रबन्धन एवं नियन्त्रण व्यवस्था का एक व्यापक अवलोकन करने का प्रयास किया गया है और निगम की वित्तीय प्रबन्ध व्यवस्था में विद्यमान विभिन्न वर्तमान समस्याओं के कारणों को खोजा गया है और उन समस्याओं के उचित निदान पर ध्यान देने की आवश्यकता पर बल दिया गया है ताकि यह निगम भविष्य में निदानात्मक उपायों का सहारा लेकर जनसेवा के उद्देश्य में सफल हो सके।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *ओझा बी. एल., राजस्थान की अर्थव्यवस्था आदर्श प्रकाशन जयपुर, 2016, पृष्ठ संख्या 236–237*
2. *वार्षिक प्रतिवेदन, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम जयपुर, 2013–14, पृष्ठ 22*
3. *शर्मा एम. एल., राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में घटती लाभदायकता का एक अध्ययन, राजस्थान पत्रिका, 12 दिसम्बर 2014, पृष्ठ संख्या 6, जयपुर संस्करण*
4. *वार्षिक प्रतिवेदन राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम जयपुर, 2014–15, पृष्ठ 23*
5. *वर्मा, बी. एल. लोक उपक्रमों में वित्तीय विवरणों का तुलनात्मक विश्लेषण, यूनिवरसिटी बुक हाऊस, जयपुर, 1988, पृष्ठ 37*
6. *तुरान, एम. एस., हरियाणा राज्य पथ परिवहन निगम की कार्यप्रणाली एवं नियन्त्रण व्यवस्था, गुरू जम्भेश्वर विश्वविद्यालय, स्मारिका, हिसार, 2003, पृष्ठ 40*
7. *शर्मा, मोहनलाल, राजस्थान राज्य पथ परिवहन में लाभदायकता का एक मूल्यांकन योजना नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ 47*
8. *नाथूरामका, लक्ष्मीनारायण, राजस्थान की अर्थव्यवस्था, आदर्श प्रकाशन जयपुर 2015, पृष्ठ 120*
9. *शर्मा, गुरूदत, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की लाभदायकता का एक अध्ययन, रमेश बुक डिपो, जयपुर 2012, पृष्ठ 81*
10. *मार्टिन, राव सेटमूथ, भारत में यातायात प्रबन्ध व्यवस्था में कार्यशील पूंजी की आवश्यकता का अध्ययन (राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के विशेष सन्दर्भ में), शोधग्रन्थ, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर, 2010, पृष्ठ 142*
11. *शर्मा, डॉ. श्याम सुन्दर, लोक उपक्रमों का संचालन और उपभोक्ता हित (राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम का एक विशेष अध्ययन),राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर*
12. *कोठारी, सी आर, परिमाणात्मक विधियां, रमेश बुक डिपो, जयपुर 2011, पृष्ठ 15*
13. *वार्षिक प्रतिवेदन, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम वर्ष 2005–06 से 2014–15*
14. *अग्रवाल एम. एल. वित्तीय प्रबन्ध के तत्व, रमेश बुक डिपो जयपुर, 2016, पृष्ठ संख 24*
15. *वार्षिक प्रतिवेदन, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम वर्ष 2005–06 से 2014–15*
16. *शर्मा एम एल, राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में लाभदायकता का एक मूल्यांकन योजना, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ 18*
17. *वार्षिक प्रतिवेदन राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम वर्ष 2005–6 से 2014–15*
18. *अग्रवाल, एम एल वित्तीय प्रबन्ध के तत्व, रमेश बुक डिपो, जयपुर, 2016, पृष्ठ संख्या 27, 28*
19. *वार्षिक प्रतिवेदन राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम वर्ष 2005–6 से 2014–15*
20. *वार्षिक प्रतिवेदन राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम वर्ष 2005–6 से 2014–15*